आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 290 | ARYA SABHA MAURITIUS | 1st July to 11th July 2014

वेद ज्ञान
Veda Jnana

ओ३म् । स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

अथर्व वेद १९/७१/१

Om stutā mayā varadā vedamātā prachodayantām pāvamāni dwijānām.
Āyuh prānam prajām pashum kirtim dravinam brahmavarchasam.
Mahyam datwā vrajata brahma lokam.

Atharva Véda 19/71/1

La Connaissance du Veda* –

Jusqu'où peut nous mener son étude approfondie et la mise en pratique de ses enseignements ?

Entreprenons l'étude et acquérons la vaste connaissance universelle, la science dans tous ses aspects, les valeurs humaines transcendantes, la foie inébranlable en Dieu, la dévotion et la spiritualité que nous transmet le Veda qui est considéré comme notre Mère Divine par tous les sages. ('Veda-Mātā')

Conséquemment l'étude du Veda bénéficie toute l'humanité dans son ensemble et purifie notre âme. Elle nous donne la santé, la longévité (longue vie), la force, la vigueur, la compétence intellectuelle, la sagesse, la clairvoyance, la gloire, la richesse, le confort, le bonheur et la joie. Elle nous gratifie aussi de la naissance de grandes âmes parmi nos progénitures / descendants qui vont certainement faire honneur à l'humanité toute entière. En outre elle nous pourvoit aussi des animaux qui nous sont très utiles dans la vie.

En nous comblant de tous ces bienfaits et sa bénédiction, en dernier lieu, elle nous indique la voie du bonheur suprême / de la félicité Eternelle ou du 'Moksha' (en Hindi) qui est le but ultime de la vie humaine sur la terre.

***Veda** – Les livres sacrés de L'Hindouisme en Langue Sanskrite Vedique.

N. Ghoorah

वेद का अनुपम सन्देश

डॉ० माधुरी रामधारी, वरिष्ठ व्याख्याता तथा अध्यक्षा रचनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी संस्थान

ओ३म्। इच्छन्ति देवाः सुवन्तम्, न स्वप्नाय स्पृहयन्ति यन्ति प्रमादमतन्द्राः ।।

'इच्छन्ति' अर्थात् चाहते हैं। **'देवाः'** - देवतागण। **'इच्छन्ति देवाः'** - देवतागण चाहते हैं। प्रश्न है देवगण किन्हें चाहते हैं? उत्तर 'सुवन्तम्' यज्ञ करने वाले को। 'यज्ञ' माने उत्तम कर्म। **'यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म'** - अर्थात् श्रेष्ठतम् कर्म का नाम यज्ञ है। जो मनुष्य उत्तम कर्म करता है, उसी को देवता चाहते है। **'स्वप्नाय'** - जो स्वप्न में है, सोया हुआ है, ढीला है **'न स्पृहयन्ति'** उसे देवता नहीं चाहते हैं। **'अतन्द्राः'** जो लोग तन्द्रा में नहीं हैं, ढीले नहीं हैं, आलसी नहीं है। वे **'प्रमादम्'** - प्रमाद अर्थात् उत्तम सुख प्राप्त करते हैं।

कर्मठ व्यक्ति सबके प्रेम का पात्र बनता है। प्रेम ही नहीं, अपितु मान-सम्मान भी पाता है। ईश्वर कर्मशील मनुष्य पर अपनी कृपा बरसाते हैं, उसकी सहायता करते हैं। संदेश स्पष्ट है कि मनुष्य को कर्मयोगी बनना है।

महर्षि दयानन्द की दीक्षा जब समाप्त हुई तब स्वामी विरजानन्द ने उनसे कहा – "देखो, संन्यास और कर्मयोग दोनों ही मोक्ष दिलाने वाले हैं, पर दोनों में से कर्मयोग विशिष्ट है। इसीलिए तुम संसार में जाओ। वेद-प्रचार करने का उत्तम कर्म करो और परम आनन्द प्राप्त करो।" गुरु की आज्ञा मानकर ही महर्षि दयानन्द पुरुषार्थी बने। वेद-प्रचार करते हुए उन्होंने देखा कि भारतीय समाज अन्धविश्वास त्यागने के लिए तैयार नहीं है। समाज के रुढ़िवाद हटने का नाम नहीं ले रहा। ढोंग मिट नहीं रहा। परन्तु महर्षि इस विचार से कर्म करते गए कि समाज अवश्य सुधरेगा और पुरुषार्थ का फल आज नहीं तो कल मूर्त रूप में सामने पड़ा होगा। ऐसा ही हुआ। महर्षि दयानन्द की कर्मशीलता से भारत के कोने-कोने में आर्य समाज खड़ा हुआ। पूरे विश्व के अलग-अलग भू-भागों में भी आर्य समाज खड़ा हुआ और वेद ज्ञान का प्रकाश फैला, अज्ञानता का अन्धकार दूर हुआ। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि **'इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं'** - यज्ञ करने वाले को, श्रेष्ठ कर्म करने वाले को देवता चाहते हैं और उनका सहयोग करते हैं।

यज्ञ को पूरा करने में, अच्छे कर्म को पूरा करने में समय लगता है। गोस्वामी तुलसीदास जी को 'रामचरितमानस' का लेखन-कार्य पूरा करने में दो साल, सात महीने और छब्बीस दिन लगे। टॉल्सटॉय के प्रसिद्ध उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' की रचना में सात साल लगे। वेब्स्टर का अंग्रेज़ी शब्द कोश छब्बीस सालों के घोर परिश्रम के बाद तैयार हुआ। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कहावत है कि 'रोम एक दिन में नहीं बना'।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

मोक्ष-प्राप्ति

भारतीय जीवन-पद्धति के आधार पर मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य 'मोक्ष' माना गया है । जब तक जीवात्मा मोक्ष की स्थिति में नहीं आता है, तब तक वह अवागमन और दुखों से छुटकारा पा नहीं सकता है। जन्म-मरण का यह क्रम अनादिकाल से चलता आ रहा है । हमेशा से जीव अपने कर्मानुसार संसार में आता है और कर्मफल भोग कर पुनः वह जन्म-मरण के बन्धन में बन्ध जाता है ।

मानव को समस्त जीवयोनियों में सबसे उत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ जीव माना जाता है। इसी योनि में आत्मा सत्य-ज्ञानी बनकर पाप-पुण्य के भेद को समझकर अपने स्वरूप को पहचान सकता है। विश्व के अन्य जीवों में यह योग्यता नहीं। इसीलिए वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि धर्म-ग्रन्थों में वर्णित है कि मानव जन्म का मुख्य उद्देश्य 'मोक्ष प्राप्ति' है ।

*ऋषि-मुनियों, महात्माओं, योगियों, तपस्वी जनों, साधकों और महापुरुषों का यही कथन है कि मानव-जीवन से मुक्ति पाने में अनेक जन्म लग जाते हैं। गीता कहती है :– **'अनेक जन्म संसिद्धि'** – अर्थात् जीवात्मा अनेक जन्मों में निष्काम कर्म, योगाभ्यास, उन्नति, प्रगति आदि करता हुआ मोक्ष का अधिकारी बन पाता है । धार्मिक ग्रन्थों में यह प्रमाणित है कि अनेक ऋषियों, मुनियों, योगियों, महात्माओं आदि साधु-सन्तों ने मोक्ष-प्राप्ति के लिए कई जीवन लगा दिए। अपने सम्पूर्ण जीवन को तप-त्याग, योग-साधना और ईश्वर-भक्ति में व्यतीत करते रहे, निरन्तर मुक्ति-मार्ग पर चलते हुए कठिन से कठिन परीक्षाएँ देते रहे, परन्तु सभी लोग मोक्ष-प्राप्ति के अधिकारी नहीं हुए, क्योंकि मुक्ति पाना बड़ा दुर्लभ होता है ।*

पाठक वृन्द ! यह सदा ध्यान रहे कि जन्म-मृत्यु, जरा-व्याधि आदि भौतिक बन्धनों से मुक्त हो जाना ही मानव जीवन का सबसे मुख्य उद्देश्य माना जाता है। यह ईश्वर का वरदान है कि मनुष्य-शरीर में ही जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति 'मोक्ष-प्राप्ति' सम्भव है। वास्तव में 'मोक्ष' क्या है ? सभी वेदाचार्यों, महात्माओं और सन्तों का यह मत है कि हमारी आत्मा जब सभी प्रकार के दुखों, जन्म-मृत्यु के बन्धनों आदि से छूटकर परमात्मा के अनन्त आनन्द में विचरण करने लगती है, तभी 'मोक्ष' कहा जाता है। उस मोक्ष-प्राप्ति की अवस्था में जीव कर्म-रहित होकर प्रभु के परमानन्द में लीन हो जाता है। उस अवस्था में उसे किसी प्रकार का भौतिक-दुख अथवा सांसारिक-बन्धन अपने वश में नहीं कर सकता है ; वह मुक्त हो जाता है ।

हम समस्त आर्य जनों का परम कर्तव्य है कि हम वैदिक-विद्याओं से प्राणशक्ति, दीर्घायु, यश, सम्पति, श्रेष्ठ सन्तानें आदि प्राप्त करते हुए आध्यात्मिक आनन्द, सुख एवं शान्ति ग्रहण करते जायें और 'मोक्षधाम' की ओर बढ़े, तभी हमारे जीवन का प्रमुख लक्ष्य पूर्ण होगा, अन्यथा हम जन्म-मरण के चक्कर में पड़ते रहेंगे।

पाठको ! मुक्ति की प्राप्ति तब तक नहीं होती, जब तक अज्ञान मलिनता मानव के मन-मस्तिष्क पर चिपकी रहती है ।

अतः सत्य विद्या ग्रहण करना हमारा मुख्य कर्म है। श्रावणी महोत्सव के उपलक्ष्य में बड़ी आस्था पूर्वक भक्तिभाव से यज्ञ-महायज्ञों में हम भाग लेंगे और वेदों के पठन-पाठन से सत्य, शास्वत वेद-विद्याएँ ग्रहण करके अज्ञान के घोर अन्धकार से दूर होंगे तभी मानव जीवन साकार साबित होगा ।

बालचन्द तानाकूर

सत्यार्थप्रकाश मास की समाप्ति

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मोरिशस

फूलबसिया आश्रम शेमें ग्रेनियें में गत रविवार ता० २९ जून २०१४ को आर्य सभा द्वारा घोषित सत्यार्थप्रकाश मास की समाप्ति एक यज्ञ द्वारा किया गया। इस यज्ञ का ब्रह्मा थे आचार्य बितूला और उनके ईग-गिर्द बैठे थे। ९ पुरोहित-पुरोहिताएँ जो मोरिशस के कोने-कोने से आए हुए थे, जैसे - बोनाकेई, जूब्रेय, ग्राँ पोर और शेष सभी सावान ज़िले के थे। बिरले ही किसी प्रान्तीय स्थल पर राष्ट्रीय समारोह में आर्य सभा के इतने अन्तरंग सदस्य उपस्थिति देते हैं। आर्य सभा के मान्य प्रधान, डा० निऊर, प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम, उपप्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, पुस्तकाध्यक्ष श्री बिसेसर राकाल जी महामंत्री श्री हरिदेव रामधनी, उपमंत्री प्रभाकर जीऊत, श्री राजेन रामजी जो सावान आर्य ज़िला समिति के अध्यक्ष, भी हैं और श्री भगवानदास बुलाकी जी, मंत्री सावान आर्य ज़िला समिति। मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में वर्त्तमान सरकार के मिनिस्टर एर्वे एमे थे जिन्होंने एक सारगर्भित तथा ओजस्वी भाषण दिया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज द्वारा किये जा रहे कार्यों सबसे अधिक प्रभावित व प्रेरित हुए । वे दो मुद्दे हैं शिक्षा का प्रचार और महिलाओं की मुक्ति (Emancipation of Women) उसके अलावा सभा प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर और उप-प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम, श्री राजेन रामजी ने और बुलाकी जी ने स्वागत भाषण दिये। महामंत्री श्री रामधनी ने शुरू से अन्त तक बखूबी कार्य का संचालन किया ।

सभी ने एक स्वर से पंडित सतीश बितूला जी, उनकी धर्म पत्नी श्रीमती तपस्या शर्मा और उनके होनवार पुत्र व्योमन द्वारा स्वामी दयानन्द के अधूरे स्वप्न को पूरा करने में जो प्रयास हो रहा उनकी प्रशंसा की। आचार्य बितूला जी दो जिलों में कार्य कर रहे हैं। वे आज शामारेल जैसी जगह पर यज्ञ-हवन और प्रवचन कर रहे हैं ।

कार्य बहुत सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ। अन्त में हम इस आशा और विश्वास से अलग हुए कि पूरे श्रावणी मास में वेद का प्रचार करेंगे । वेद मास शुरू होगा १३ जुलाई को और औपचारिक रूप से चलेगा पूरे एक महीने तक । अनौपचारिक रूप से एक महीने से अधिक दिनों तक चलेगा। यज्ञ और वेद प्रचार तो आर्य समाज की आत्मा है ।

घर वापस जाने से पहले सभी को भोजन से सत्कार किया गया।

विक्रमशिला हिन्दी विद्या पीठ द्वारा श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ सम्मानित

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ,पी.बी.एच., साहित्यलंकार को विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार ने अपने १८ वें महाधिवेशन में हिन्दी विद्या-पीठ चयन-समिति द्वारा मॉरीशस के हिंदी साहित्यकार (कवि-लेखक) श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ को 'सारस्वत् सम्मान' से सम्मानित किया। यह सम्मान दिनांक १३ एवं १४ दिसम्बर २०१३ को उज्जैन (मध्यप्रदेश) में दिया गया जिससे न सिर्फ़ साहित्यकार इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ अपितु मॉरीशस के हिन्दी साहित्य को गौरव प्राप्त हुआ है।

ध्यातव्य है कि इन्द्रदेव द्वारा प्रणीत कुल चार मौलिक ग्रंथ विदेशों में हिन्दी जिसमें विश्व के २५ से अधिक देशों में हो रहे हिन्दी पठन-पाठन तथा साहित्य सृजन पर विशद रूप से लिखा है।

आर्य समाज और हिन्दी विश्व संदर्भ में, जिसमें २० से अधिक देशों में आर्य समाज के अस्तित्व और उसके द्वारा हिंदी प्रचार के लिए पूरा ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

हाइकु महाकाव्य (यह जपानी शैली की कविता है। इन्द्रदेव द्वारा २.२४४ हाइकु कविताएँ उतने शीर्षक से लिखा हुआ महाकाव्य है। यह विश्व का पहला हाइकु महाकाव्य है।

प्रतिध्वनियाँ - २२२ व्यस्क स्तर की कविताएँ हैं ।

इन्द्रदेव द्वारा लिखित उक्त ग्रन्थों के लिए भारत में छपे 'विश्व हिन्दी गौरव ग्रन्थ' में स्थान मिला है। डा० कमल किशोर गोयनका जैसे लेखक - समीक्षक ने इन्द्रनाथ के इन शोधपरक ग्रन्थों को अनुपम साहित्य साधना मानी है।

सन् २०१३ इन्द्रनाथ के लिए अविस्मरणीय और गौरव का वर्ष रहा है । विक्रम शाला हिंदी विद्यापीठ के अलावा उन्हें उसी वर्ण में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'विश्व भाषा हिंदी सम्मान' तथा हिन्दी साहित्य अकादेमी मॉरीशस द्वारा 'हिंदी सेवी विभूति' उपाधि से सम्मानित किया गया। इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध साहित्यकार के रूप प्रतिष्ठित हो गए हैं।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम,*
आर्य रत्न
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

ओ३म्। इच्छन्ति देवाः सुवन्तम्, न स्वप्नाय स्पृहयन्ति यन्ति प्रमादमतन्द्राः ।।

पृष्ठ १ का शेष भाग

धरती से अन्न उगाने के लिए हल चलाना पड़ता है, मिट्टी को जोतना पड़ता है । बीज बोने होते हैं। सिंचाई करनी होती है तब जाकर कहीं अंकुर फूटता है। घण्टों दही बिलौने पर ही मक्खन निकलता है। लाखों मन पत्थर काटने के बाद ही अन्दर से हीरे की एक कनी निकलती है। जो मनुष्य लगातार श्रम करने से थकता नहीं, – घबराता नहीं और नाहीं हताश-निराश होता है। उसी को **'इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं'** - देवतागण चाहते हैं और उसके सहायक बनते हैं।

'स्वप्नाय' - जो सपने में होता है, सोया हुआ और आलसी होता है, उसे देवता नहीं चाहते, क्योंकि मानव जीवन कर्म करने के लिए प्राप्त होता है। ईश्वर ने श्रम करने के लिए ही मनुष्य को शरीर के अंग दिए हैं। एक बार एक भिखारी एक धनवान् सेठ के सामने हाथ फैला रहा था। सेठ ने उससे कहा – "मैं तुम्हें एक लाख रुपये देता हूँ। बदले में तुम मुझे अपने दोनों हाथ दे दो।"

भिखारी ने उत्तर दिया – "मेरे हाथ बेचने के लिए नहीं हैं। इन्हीं हाथों से मैं काम करता हूँ।"

सेठ बोला — "लेकिन तुम तो भीख माँगते हो। काम तो तुम करते नहीं। फिर इन हाथों की क्या आवश्यकता?"

भिखारी समझ गया कि हाथ दूसरों से माँगने के लिए नहीं होता। अपितु परिश्रम करके कमाने के लिए होता है। वेद ने आरम्भ से ही मनुष्य को संदेश दिया – **'स्वयं यज्ञस्य स्वयं जुषस्व'** – हे मनुष्य, तुम स्वयं यज्ञ करो और स्वयं सुख भोगो। दूसरों के सहारे मत जीओ । यह याद रखो – **'महिमा वे अन्येन न सन्नशे'** – तेरी महिमा और तेरा यश दूसरों के द्वारा न फैलेगा। तुम दूसरों का मुँह मत ताको। दूसरा व्यक्ति तुम्हारा काम नहीं कर सकता। दूसरा व्यक्ति तो मात्र सहयोगी बन सकता है और तुम्हें सहयोग तभी मिलेगा जब तुम अपना काम स्वयं करोगे। नौकर भी तभी सहायता करता है, जब मालिक स्वयं कुछ करता है। जो मालिक सोता है उसके नौकर भी सोते हैं। अतः हे मनुष्य तुम **'तन्द्रा'** - त्यागो, सुस्ती त्यागो, यह ढीलापन छोड़ दो, क्योंकि **'यन्ति प्रमादमतन्द्राः'** - जो तन्द्रा आलस्य का त्याग करता है, आलस्य करना छोड़ देता है, उसे **'प्रमादम्'** - श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त होता है, उत्तम सुख मिलता है।

सुख के रास्ते पर, कर्म के मार्ग पर अनेक आपत्तियाँ आती हैं । वेद कहता है – **'नमोऽस्तुते निर्झते'** – हे भारी विपत्ति, तुझे मेरा प्रणाम ।

वेद का संदेश ग्रहण करने वाला पुरुषार्थी आपत्तियों को नमस्कार करता है और आगे बढ़ता है। विनोबा भावे ने जब भूदान यज्ञ आरम्भ किया, तब उनपर लोभ और स्वार्थ का आरोप लगा। परन्तु विनोबा ने निन्दा करने वालों को नमस्कार किया और वे हज़ारों मील पैदल चले। धूप में चले, वर्षा में चले, जाड़ों और गर्मियों में चले। विनोबा भावे जी के अनुयायियों ने अनुरोध किया –

'बाबा, चलते-चलते बहुत दिन हो गए हैं। थोड़ा आराम कर लीजिए ।'

विनोबा जी के मुख से निकला – 'सूरज रुकता नहीं, चाँद टिकता नहीं। नदी थकती नहीं। सब चलते, बहते जा रहे हैं, तो मैं कैसे रूकूँ ।

आज विनोबा भावे जी का नाम अमर है। उन्होंने कर्मयोगी बनकर जीवन का लक्ष्य पूर्ण किया। **'प्रमादम्'** असीम सुख प्राप्त किया और मरकर भी वे अमर हो गए। अगर लोगों की निंदा से वे हतोत्साहित हो जाते तो अपने कर्म पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। यज्ञ नहीं कर पाते।

हल जोतने वाला व्यक्ति अगल-बगल कोई चुहिया देखकर उसको पकड़ने में समय नहीं गंवाता। वह ध्यानमग्न होकर हल जोतता जाता है। कर्म में पूर्णतः लीन व्यक्ति को ही 'इच्छन्ति देवा' - देवता चाहते हैं और उस व्यक्ति को **'इन्द्र इच्चरतः सखाः'** - इन्द्र अपना सखा बना देते हैं जो कार्य के सफल न होने पर उसे नये सिरे से आरम्भ करता है । जो बार-बार प्रयास करता है, उसी को असाधारण सुख मिलता है।

कार्लाइल ने फ्रांस की क्रान्ति का इतिहास लिखने में बड़ी मेहनत की। पुस्तक का पहला भाग पूरा हुआ तो उसे अपने एक मित्र को पढ़ने के लिए दिया। मित्र ने पढ़कर कागज़ों को मेज़ पर रखा। गलती से पेपर फ़र्श पर गिर पड़े। नौकरानी ने उन्हें रद्दी समझकर आग जलाने के लिए काम लिया। कागज़ के जल जाने पर मित्र को बहुत दुख हुआ, परन्तु कारलाइल के माथे पर शिकन तक नहीं आई। उन्होंने दोबारा पुस्तक लिखी और पूरे संसार ने उनकी मेहनत की सराहना की। उनका जीवन धारा के गीत की तरह संगीत करते हुए आगे निकल आया। **'यन्ति प्रमादम् तन्द्राः'** तन्द्रा, आलस्य त्यागने वाले लोग **'प्रमादम्'** - उत्तम आनन्द प्राप्त करते हैं ।

वेद का संदेश है कि हे मनुष्य तुम भाग्य के भरोसे मत रहो, दूसरों के भरोसे मत रहो। यज्ञ करो, श्रेष्ठ कर्म करते जाओ। फिर देखो ईश्वर सहायक बनते हैं कि नहीं। फिर देखो सुख रूपी देवता तुम्हारा अभिनन्दन करता है कि नहीं?

OM
Arya Sabha Mauritius
Flacq Arya Jila Parishad
Shravani Programme
13th July to 10th August 2014

S/N Day Date Time Venue Responsible Pandits

1. Sun 13 Jul 7.30 a.m. Camp Cassia AMS No. 416 Pt. P. Koonja & Pt. S. Ramkalawon
2. Mon 14 Jul 3.00 p.m. Riche Mare AS 30 Pt. Pokhun & Pt. Sooknauth
3. Tues 15 Jul 2.00 p.m Lallmatie AMS 263 Pt. D. Ramdu & Pta. S. Domun
4. Tues 15 Jul 2.00 p.m. C. Garreau AMS Pta. P. Durumdur
5. " " 4.00 p.m. P. de Flacq C. Accassia AS 244 Pt. S. Ramkalawon & Pta. L. Koonja
6. " " 4.00 p.m. B. Accueil As 33Pt. N.Domun
7. " " 3.30 p.m. P. Retraite AMS 323 Pta. S. Dabeeah
8. " " 4.00 p.m. C. Ithier AS 39 & AMS P. Sooknauth
9. Wed 16 Jul 4.00 p.m. Bon Accueil As 111 Pt. N. Domun
10. Thurs 17 Jul 3.30 p.m. B. Mere As 29 & AMS 440 Pt. D. Ramdu & Pta. P. Durumdur
11. " " " Ecroignard As 90 & ASM 399 Pt. D. Ramsurrun & Pta. P. Boojiawan
12. " " 4.00 p.m. Bon Accueil AS 111 Pt. N. Domun
13. Fri 18 Jul 2.00 p.m. Shanti Nagar AMS 177 Pta. P. Durumdur

.....to be continued

सत्यार्थप्रकाश

सत्यार्थप्रकाश परम योगी महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज जी की लोक विख्यात रचना है। आर्यों की दृष्टि में यह वह ग्रन्थ है जो वेद का द्वार खोलता है। यह एक धार्मिक विश्वकोश है जो १४ समुल्लासों में विभक्त है –

१. प्रथम भाग में १० समुल्लास हैं जिसमें ऋषि जी ने वैदिक साहित्य एवं दर्शन की चर्चा की है ।

२. दूसरे भाग में ४ समुल्लास हैं जिसमें विभिन्न मज़हबों की चर्चा की गई है ।

सत्यार्थप्रकाश मानव जीवन में एक नयी वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया है। यह ग्रन्थ इतना लोकप्रिय है कि आज संसार की २० से ज्यादा भाषाओं में इसका अनुवाद उपलब्ध है ।

जिस प्रकार हमारे हिन्दू समाज में रामायण एवं गीता आदि ग्रन्थों का मान एवं आदर है, उसी प्रकार प्रत्येक आर्य समाजी के घर पर कम से कम एक प्रति सत्यार्थप्रकाश होना चाहिए जिससे वह प्रतिदिन पढ़ा करे।

एक धार्मिक कविता सत्यार्थप्रकाश पर –

है सत्यार्थप्रकाश हमारा,
प्राणों से बढ़ कर प्यारा ।
शतशः वर्षों से भारत के,
आँगन में अंधियारा था।
उस तमसावृत गगनांगन में,
दयानन्द रवि उदय हुआ ।
सत्य अर्थ का पुण्य प्रकाशन,
प्रिय सत्यार्थप्रकाश हुआ ।
है .....
मोह महातम हरनेवाला,
ज्ञान उजाला करनेवाला ।
वैदिक पाठ पढ़ानेवाला,
गत गौरव गुण गानेवाला ।
भव्य भावना भरनेवाला,
दिव्य ज्योति का स्रोत सितारा ।
है .....
१४ समुल्लासों की यह पोथी,
हमारे ऋषि जी का अमर विधान ।
मिटाकर जग का विषम विवाद,
करेगा वही विश्व कल्याण ।
इनकी शान न जाने देंगे,
इस पर आँच न आने देंगे ।
है.....
शुभ सन्मार्ग सुलझाया इसने,
बुद्धिवाद गाया इसने ।
सोता देश जगाया इसने,
प्रेम प्रवाह बहाया इसने ।
सत्य सनातन धर्म सिखाता,
भेद भाव, भ्रम भूत भगाता ।
है.....
कोटि कोटि जनता की आश,
अमर रहे सत्यार्थप्रकाश ।
फिर से सतयुग लानेवाला,
दयानन्द ऋषि का सत्यार्थप्रकाश ।
जीवन ज्योति जगानेवाला,
प्रेम पीयूष पिलानेवाला ।
है .....
परमेश्वर गुणगान है इसमें,
सृष्टि क्रम विज्ञान है इसमें ।
सत्य असत्य पहिचान है इसमें,
प्रभुपद प्रेम प्रीति है इसमें ।
धरम करम और इमान यही है,
जीवन धन और प्राण यही है ।
है .....
स्वालम्बन सिखलाया इसने,
सत्य धर्म विस्तारा इसने ।
गुरुडम का गढ़ ढाया इसने,
जग में निर्भय भाव प्रचारा इसने ।
वैदिक धर्म ध्वजा फहरावें,
बलिवेदी पर शीश चढ़ावें ।
है .....
कौन कहता है हम से छीन,
हमारा प्रिय सत्यार्थप्रकाश ।
सत्य का सागर बस वह एक है,
यह अन्मोल सत्यार्थप्रकाश ।
जाए जान तो जाने देंगे,
किन्तु इसको न मिटने देंगे ।
है .....
आर्य जाति की डगमग नौका,
का प्रलम्ब पतवारा है ।
वही हमारा जीवन धन है,
केवल एक सहारा है ।
जब तक यह जीवन है जग में,
भरसक उसे प्रचारेंगे ।
है .....

आर्य जीवन प्राप्ति के नियम

(१) आर्य समाज के उद्देश्य अनुकूल आचरण स्वीकार करना ।
(२) कभी भी आर्य समाज के उद्देश्य के विरुद्ध कोई कार्य न करना ।
(३) ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना, उपासना के मन्त्रों का सदा उच्चारण करना ।
(४) चंद ईश्वर भजनों को कण्ठस्थ करना ।
(५) सन्ध्या और हवन नित्य प्रति करने की आदत डालना ।
(६) शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए धर्म-ग्रन्थों का स्वाध्याय करना।
(७) स्वाध्याय का कभी त्याग न करना ।
(८) नित्य-प्रति सन्ध्या के बाद ईश्वर से बल, बुद्धि और भक्ति की याचना करना ।
(९) ब्रह्म मुहूर्त में उठकर भक्ति, योग, साधना चिंतन करना ।
(१०) समय का सदा सदुपयोग करना और कभी भी दुरुपयोग न करना ।
(११) तपस्वी बनकर जीवन व्यतीत करना और आलस्य और प्रमाद को निकट न आने देना।
(१२) सदा आशावादी बने रहना, भूल कर भी आशा का त्याग न करना ।
(१३) आत्म विश्वासी होना, अपनी आत्मा पर भरोसा करना ।
(१४) सर्वदा सत् शास्त्रों को पढ़ना और अपने जीवन पर दृष्टि रखना ।
(१५) अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर अपनी सारी शक्ति उस लक्ष्य की प्राप्ति में लगा देना।
(१६) सज्जनों, ज्ञानी लोगों और साधु-संतों की संगत करना ।
(१७) अपने जीवन में वैदिक संस्कारों को महत्व देना ।
(१८) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना ।
(१९) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करना ।
(२०) सबसे प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्ताव करना इत्यादि ।

भक्ति दर्पण से प्रकाशक
बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

निधि दाता सम्मानित हुए

शनिवार दि० २८.०६.१४ को सवेरे दस बजे आर्य सभा के तत्वावधान में स्थिर निधि समिति ने दाताओं को सम्मानित करने हेतु एक समारोह आयोजित किया था। मौक़े पर सामाजिक एकता और आर्थिक सशक्तिकरण मन्त्री माननीय सुरेन्द्र दयाल जी के साथ एम.जी.आई के महा निर्देशक श्री विजय मधु जी उपस्थित थे।

ज्ञात हो कि सब मिलाकर निधि के कोश में पाँच मिलियन रुपये से कुछ अधिक हैं। प्रत्येक दाता ने दान देते हुए शर्त रखी थी कि उनके द्वारा दी जाने वाली राशि व्याज को निर्धारित शर्तों की पूर्ति में व्यय किया जाय। सभा की ओर से यही कोशिश रहती है कि उन शर्तों को पूरा किया जाय।

हमने मौक़े से लाभ उठाते हुए विनम्र माँग की कि जिसकी राशि दस हज़ार रुपये से कम है, उसको बढ़ाकर कम से कम दस हज़ार कर दिया जाए, भविष्य में जो भी स्थिर निधि के लिए धन राशि देंगे, वे दस हज़ार रुपयों से अधिक दें और निश्चिंत होकर शर्त रखें, क्योंकि वे शर्तें कभी बदली नहीं जाएँगी। ऐसा आर्य समाज का नियम है।

सभा की ओर से सभी दाताओं के जीवन की एक झलक की पुस्तिका बनायी जा रही है। दिवंगत आत्माओं की संतानों से माँग की जा रही है कि वे उनकी सही जानकारी सभा तक पहुँचाएँ। यह भी आश्वासन दिया गया कि भूमिदाताओं की लघु जीवनियाँ भी देने का विचार किया जा रहा। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ी उनको विस्मृत कर देंगी । ऐसा हम होने देना नहीं चाहते।

समारोह के पश्चात् सभी लोगों को महाप्रसाद से सत्कार किया गया। कार्य का संचालन श्री देवेन जोधन ने सफलता पूर्वक किया।

संगीत दिवस

संगीत दिवस (Music Day) १९८२ से मनाया जा रहा है। इस दिवस का प्रचलन शुरू किया था फ्रांस सरकार के तत्कालीन संस्कृति मंत्री ज़ाक लाँग ने, और आज दुनिया के लगभग सौ देशों में २१ जून को यह दिवस मनाया जाता है ।

मोरिशस इससे अछूता न रहा। और न आर्य समाज इससे दूर रहा। हमारी सभी स्तर की शिक्षण संस्थाओं ने बड़ी धूम धाम से इस वर्ष भी मनाया। इस वर्ष डी.ए.वी कॉलिज (Dayanand Anglo Vedic College) मोर्सेल्माँ में बहुत ही सज-धज कर कोलिज के विशाल प्रांगण में पण्डाल बनाकर मनाया गया। विविध प्रतियोगिताओं अव्वल दर्जे में आये सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। पण्डाल तो पूरा भरा हुआ ही था। आमंत्रित लोगों के साथ पी.टी.ए. सदस्य और बच्चों के अभिभावक भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। आर्य सभा मोरिशस के अनेक सदस्य गण अपनी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ा रहे थे। ज़िला परिषद् के अध्यक्ष को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था तो आर्य सभा के उपाध्यक्ष श्री सत्यदेव प्रीतम को विशेष अतिथि की हैसियत से आमंत्रित किया गया था, क्योंकि इन दिनों वे हिन्दू एडूकेशन ओथोरिटि के प्रधान भी हैं ।

पिछले शुक्रवार २० जून को आर्य सभा द्वारा संचालित दोनों प्राथमिक पाठशालाओं में यह दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। वाक्वा नगर में स्थित पं० काशीनाथ किस्तो आर्यन वैदिक स्कूल के मानेजर मुनेश सीताराम आर्य सभा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। अंग्रेज़ी, फ्रेंच्छ के सिवा सभी भाषाओं में बच्चों ने कार्यक्रम पेश किए, जिन्हें अभिभावकों ने सराहा। याद दिलाते हुए हमें गर्व है कि पंडित काशीनाथ किष्टो आर्यन वैदिक स्कूल में अंग्रेज़ी, फ्रेंच्छ के अलावा तमिल, तेलेगू, मराठी, उर्दू मनदारिन और हिन्दी की पढ़ाई होती है।

पूर्वी गाँव लावाँचिर में जो रामगति आर्यन वैदिक हिन्दू एडड स्कूल है वहाँ भी शुक्रवार को दोपहर दो बजे संगीत दिवस के सिवा गत साल की सी.पी.ई में सफल १७ परीक्षार्थियों को पारितोषिक प्रदान किया गया क्योंकि उन १७ विद्यार्थियों ने प्रशंसनीय सफलता प्राप्त करके किसी ने रोयाल कॉलिज क्यूरपिप, किसी ने रोयाल कोलिज पोर्ट लुईस कुछ लड़कियों को क्वीन एलिज़बस कोलिज में दाखिला प्राप्त किया तो किसी ने ध्रूपनाथ रामफल तो किसी ने गांधी संस्थान तो किसी ने सर लेखराज तिलक / गत साल सब मिलाकर सी.पी.ई की रिज़ल्ट ९० % से थोड़ा ऊपर थी।

अभी एक मास भी गुज़र नहीं पाया है हिन्दू एडूकेशन ओथोरिटि द्वारा बच्चों की सुविधा के लिए एक शेल्टर बनाया गया जिसका उद्घाटन Flacq - Bon Accueil चुनाव क्षेत्र के प्रतिनिधि माननीय अनिल कुमार बेचू के कर कमलों द्वारा हुआ। उसके साथ उसी इलाक़े के पी.पी.एस. माननीय धीरज खामाजीत के साथ फ्लाक ज़िला परिषद् के अध्यक्ष हरदोयाल भी उपस्थित थे। विशेष बात इस साल यह थी कि पुलिस दल के संगीत बैण्ड के चन्द सिपाही ने अपने संगीत द्वारा लोगों के मन को मोह लिया। बच्चों द्वारा नाच, गाने और कलापूर्ण प्रदर्शन आकर्षण का विषय रहा ।

यह प्रसन्नता की बात है कि डी.ए.वी पोर्ट लुई, डी.ए.वी मोंसेल्माँ तथा आर्यन वैदिक स्कूल वाक्वा और रामस्वरूप रामगति आर्यन वैदिक ऐडड स्कूल लावाँचिर द्वारा आयोजित संगीत दिवस के कार्यक्रम उच्च स्तर के रहे। सभी को हार्दिक धन्यवाद।

डी.ए.वी कालेज पोर्ट लुई में

डी.ए.वी कालेज पोर्ट लुई में गत शुक्रवार २० जून २०१४ को संगीत दिवस का भव्य आयोजन किया गया था, जिस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा रोचक संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये थे। मौके का लाभ उठाकर पारितोषिक समारोह का भी आयोजन हुआ था। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेताओं को पुरस्कृत किया गया था।

उस समारोह में आर्य सभा के मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन नीऊर जी, प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, उपमन्त्री डा० जयचन्द लालबिहारी जी, कोषाध्यक्ष श्री भोलानाथ जीऊत जी ने अपनी उपस्थिति देकर संगीत समारोह की शोभा बढ़ाई थी।

The Satyārtha Prakāsh : a code of conduct for our physical, moral and spiritual uplift

In the **Swamantavyāmantavya Prakāsh** of the Satyārtha Prakāsh, Maharishi Dayanand Saraswati has referred to a famous shloka from the Neetishataka of Shri Bhartrihari:

Nindantu neetinipunā yadi vā stuvantu,
Lakshmih samāvishatu gachcchatu va yatheshtama I
Adyeyva vā maranamastu yugāntare vā,
Nyāyāta pathah pravichalanti padam na dhirāh II

Whether somebody endowed with knowledge of true strategies indulges in denigration or praise.
Whether wealth and fame comes or whatever is in possession goes.
Whether death comes at this very instant or there still remains a long time in our life line.
But a level-headed person will never be blown off his feet.
He will not quiver a single step from truth, justice, principles and values in day-to-day life.
He will happily bear the brunt in times of adversity and steadily continue his journey with a higher level of motivation.

The ultimate aim of the soul is to attain *moksha* or eternal bliss - the one and only state of immaculate happiness.

In his various writings and discourses Maharishi Dayanand has emphasised on the need for one and all to *strive* on the path of *dharma*, *artha* and kāma unto *moksha*. The root cause of the soul to be trapped in the cycle of birth and death is *avidyā*, i.e. contrary, false or inaccurate knowledge on spiritual matters as well as sticking to only mundane knowledge). The Satyārtha Prakāsh is indeed a masterpiece which unfolds the true spiritual knowledge rendering accessible to all.

Walking the way is ours. The author has elaborated on the methodology to assimilate the knowledge ingrained in that treatise and its application in our day-to-day living: *shravan* (active reading and listening), *manan* (contemplation or due consideration of right and wrong), *nididyāsan* (rationalization or self questioning on the pros and cons) and *shākshātkāra* (realization). This is the one and only technique which will empower us with such profound knowledge to progress on the path of spirituality (spiritual reality.)

Maharishi Dayanand quotes the YajurVeda (40.14) to emphasize that we should all be familiar with the real nature of *vidyā* and *avidyā*. *Avidyā* [*karma* or deeds and *upāsnā* or devotion / worship] enables us to die happily and *vidyā* (spiritual knowledge in the true sense) emancipates us from the cycle of birth and death, i.e. attain *moksha*.

The Satyārtha Prakāsh contains numerous citations from the Darshan shastras (ancillary Vedic literature) to sustain the concept of *dharma*, *artha*, *kāma* and *moksha* as the main purpose of the human form of life in the universe, hence the need for one and all to acquire *shudh gyāna* (authentic knowledge), and proceed with shudh karma (virtuous / truthful deeds) and *shudh upāsnā* (respectful devotion). The masterpiece of Maharishi Dayanand is rightly referred as an *ārsha grantha* (authoritative Vedic book); indeed a code of conduct / ethics / practice for all those who wish to work for the physical, moral / mental and spiritual uplift of the self and others.

Sages and seers expand the seminal knowledge of the Vedas and codify it to ease our understanding. Some choose to be blind and deaf to these teachings, some pretend to read and listen, some read and listen only to repeat it to others, and only a handful strive to live these values. Walking the talk is the decision of each and every individual.

Commemorating the Satyārtha Prakāsh mās (month) would yield the right results only if we look and walk towards the light as well as accompany others in their quest for enlightenment.

BrahmaDeva Mukundlall
Darshan Yog MahaVidyālaya
Gujarāt, India

ARYA SAMAJ: Its concept and worldwide role

Shri D. B. Puri, Arya Samaj, London

In this article we would like to concentrate on Arya Samaj as World Movement which was initiated by Swami Dayanand Saraswati for the revival and propagation of Vedic Dharma. Vedic Dharma is a confident assertion of Supreme Manhood, an assertion full of dignity and independence. Indians of Vedic tradition believe that God is Almighty, Omnipresent and Omniscient. The distinguishing feature of Vedic Dharma, however, is that it is a thoroughly scientific religion. The Vedic Dharma never feared scientific advancement. Religions cultivated to absolute neglect of science produced a religion of superstition, tyranny, barbarism. Science cultivated to the utter neglect of religion produced a reign of infidelity and sensuality just as we are witnessing to day all around us. The two interest united correct and perfect each other. Vedic religion or Dharma does the work of bridge between science and religion and religion and between intellect and spirit.

Vedic religion is universal for it is not a religion in the narrow sense of the term. It is not a dogma nor does it derive its authority from any single person, however, holy or wise. It is in reality a way of life quite sublime. In founding the Arya Samaj Maharshi Dayand Saraswati had no aim to establish a new religion or cult. We quote below his own words in support of what we have said:

"I don't entertain the least idea of founding a new religion or sect. my sole aim, is to believe in truth and help others to believe in it, to reject falsehood. I do not approve of what is objectionable and false in the institutions of this or any other country, nor do I reject what is good and is in harmony with the dictates of true Vedic Religion."

Swami ji wanted to revive the Vedic Dharm in all its purity and propagate it throughout the world through Arya Samaj. The most important feature and role of the Arya Samaj is that, it professes to teach a religion which is according to the spirit and needs of the age. It preaches the equality and general brotherhood among all persons of mankind. It meets the atheistic and materialistic arguments of the present age of reason with the strong theistic reason of the Vedas.

The Arya Samaj advocates social structure based on spiritual values, pacifism, vegetarianism, and a World Government. The Arya Samaj is not Gurudom nor like a dictatorial regime, where one cannot have independence of thought, belief or action. Swami Dayanad Saraswati, with a great vision, based the constitution of Arya Samaj on purely democratic lines. The followers of Arya Samaj have a unique role to play in the upliftment of the whole humanity. So Arya Samaj is in a way to become truly a world movement.

The Arya Samaj has played and can yet play an important role to save the world, which without morality and torn of strife and discord is heading towards self-destruction.

As Arya Samajists, are we prepared to play that role?

Bibliography
Puri, D.B. (Shri) 1991 Vedic Light

Electoral Reform – Referendum Office

Mr Subash Chadee (Auditor & Life Member)

Vision

The very idea of elections consists of the choice of one or more persons to represent a group of persons in an assembly where the elected ones will use their best judgments to ensure that the rights of the electors are tabled, recognized and protected.

Liabilities

In religious and social groups, the elected ones are very often not paid for their services. This is where one does not succeed in determining their liabilities. However, when they are, the limits of their responsibilities are not only well defined but the liabilities for performing and/or not performing a task are also similarly defined. They are responsible for their wrong doings and are normally expected to bear a penalty in compensation for their torts.

The decision to indulge in an act, rightful or wrongful, is the joint responsibility of all the parties in the assembly. The omission by any individual to participate in a decision does not absolve him from the liability to be part of the penalty since he knowingly opted to be part of the assembly. The determination of the amount of the individual penalty is determined on a pro-rata basis in respect of the regular monthly remuneration.

Control

Now, it is too obvious that the assembly can indulge in some activities that may not be really beneficial to the electors but may be far more economically profitable to one or more of its members especially in accounts that are not totally and transparently recorded by double entry.

To arrive at a point of proper control therefore, it is important for the monitoring of the activities of the assembly to be followed also by a parallel institution that will place benchmarks to determine the limits for a proper control especially when the whole assembly is hijacked and too obviously avoids to adopt a stand on a very burning issue.

Time Frame

The main objective of this parallel institution will be to place such benchmarks on e.g. a semester basis in front of the assembly. These benchmarks will be the wants and needs of the nation as a whole i.e. issues of national interest. Voters will during a whole term of the following six months proceed only once to one of many given addresses and cast their votes for either yes or for no in respect of the implementation of a proposal. Such addresses will be as many as the number of constituencies and the vote will be through an apparatus similar to an ATM by the use of one's National Identity Card. At the end of the relative semester or earlier if the aggregate votes for yes or for no exceeds 50% on one item, the options to vote may be stopped and a decision taken by the institution to arrange for legislation of the national tendency in respect of a relative topic. The decision will be final and will not be subject to any form of intervention from the assembly other than perhaps to input a few non-material finishing touches.

After legislation, the decision will take the normal path to be integrated as an Act or Regulation in the laws governing the relative society and that Rule will be effective within one hundred days from the date of promulgation.

The Name

This parallel institution will work in close collaboration with but independent of the Electoral Commissioner's Office and will be called The Permanent Referendum Office. It will be there to stay.

Implementation

The Referendum Office has thus to be set up after a place is created for it in the constitution. It will take the opinion of the population entitled to cast a vote in order to tackle the issues that may not be handled by the assembly on account of being very sensitive like e.g. The re-Introduction of Capital Punishment.

It will receive such issues of national interest where the needs of the people are concerned on a regular basis and handle them in order of priority not necessarily chronologically. The priority will be determined by an independent body of intellectuals who have nothing to do directly or indirectly with politics and who may be relied upon as honest and trustworthy citizens. In this context, naturalized citizens will be eligible to vote only after a term of five years after naturalization. Other voters will similarly be eligible only if they are citizens residing in the nation i.e. being physically in the territory for more than 183 days prior to the date of the vote.

Objective

This paper concerns the birth and setting up of a Permanent Referendum Office (PRO) whose activities are broadly defined above and whose existence will moderate excesses in the acts of the assembly. No reform may be considered a reform if it does not increase the possibility of giving more weight to the rights of the voters. This paper will do just that if it is given the opportunity to do so.

The rights of the voters should not be on the surface only at the end of a mandate. They should be there and alive at all times. This is why the PRO has to stay active and on line at all times and will not close at all.

The time has come to ensure that decisions can also be taken by the people (50% or more), for the people and not only by a handful of guys for the benefit of a group.

Please allow this office to come and offer it to the nation. History will thank you for establishing a framework for
(a) a true Corporate Social Responsibility,
(b) an opportunity to mould a good code of conduct, and
(c) a real chance to maintain in a democracy the citizens of both to-day and tomorrow.

When it will be adopted, it will not only be a pride to the nation, but also an example for The United Nations to adopt and disseminate for adoption by all the nations of Mother Earth.

N.B :

For any query please contact Mr Chadee on Tel : 427 3718, Mob: 57212405

Bois des Amourettes Arya Samaj
Gunessee Bhawan, Branch No. 141

Shravani 2014

In loving memory of Swargiya Vanprasthi Dhunputh Ramdonee

July

Date	Yajman	Venue	Purohit/Purohita	Time
Thurs 24	Kumar Gungadin	Pro	Pradeep	4.00
Fri 25	Dwarka Ankush	P.S	Pratima	4.00
Sat 26	Laloon Ramdonee	B.D.A	Daiboo	3.00
Sun 27	Aneeroodh Ramdonee	B.D.A	Indira	10.00
Sun 27	Shyam Teeluck	B.D.A	Rijaw	2.00
Mon 28	Bundhoo Nani	Pro	Pradeep	4.00
Wed 30	Rishi Sadal	V.G.	Indira	4.00
Thurs 31	Raginee	V.G.	Pradeep	4.00

to be continued .....